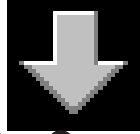


२१वीं सदी-उज्ज्वल भविष्य के

उद्घोषक



वेदमूर्ति-तपोनिष्ठ

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य
के

अमृत-वचन



प्रस्तुति

शान्तिकुञ्ज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस  शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

अमृत वचन

हर व्यक्ति जान या अनजान में अपनी परिस्थितियों का निर्माण आप करता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

नास्तिकता ईश्वर की अस्वीकृति को नहीं, आदर्शों की अवहेलना को कहते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

काम छोटा हो या बड़ा, उसकी उत्कृष्टता ही करने वाले का गौरव है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अनीति अपनाने से बढ़कर जीवन का तिरस्कार और कुछ हो नहीं सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मरते वे हैं जो शरीर के सुख और इंद्रिय वासनाओं की वृत्ति के लिए रात-दिन खपते रहते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

असत्य सदा अकल्याणकारी होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

निरंकुश स्वतंत्रता जहाँ बच्चों के विकास में बाधा बनती है, वहीं कठोर अनुशासन भी उनकी प्रतिभा को कुंठित करता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बुद्धिमान वह है, जो किसी की गलतियों से हानि होते देखकर अपनी गलतियाँ सुधार लेता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

नैतिक निर्बलता व्यक्ति के विकास के लिए सबसे बड़ी बाधा है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दिल खोलकर हँसना और मुस्कराते रहना चित्त को प्रपुल्ल रखने की एक अचूक औषध है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

श्रेष्ठ मार्ग पर कदम बढ़ाने के लिए ईश्वर विश्वास एक सुयोग्य साथी की तरह सहायक सिद्ध होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जीवन के बहुमुल्य क्षण इसलिए नहीं हैं कि दुष्प्रवृत्ति के दुष्परिणामों को अनुभव करने के उपरान्त जानें।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपने जीवन को प्यार करो तो वह तुम्हें प्यार करेगा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

नैतिकता, ज्ञान से भी बड़ी आवश्यकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

स्वार्थपरता समस्त पापों की जननी है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कामुकता की दुष्प्रवृत्ति मानव जीवन की श्रेष्ठताओं और विशेषताओं को बर्बाद करने वाली एक सत्यानाशी डायन है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

हरामखोरी - मुफ्तखोरी नैतिक और सामाजिक पाप है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईश्वर के पुत्र होकर शर्मनाक सांसारिक इंद्रिय भोगों के कुत्सित आनंद नहीं ले सकते, क्योंकि वह तो दिव्य है, निष्कलंक है, निर्मल है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बेईमान या अनास्थावान् एक तरह से दोनों ही एक मर्ज के मरीज हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

संसार के बाजार में पुरुषार्थ का सिक्का चलता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपनी त्रुटियों, कमजोरियों के प्रति असहिष्णु रहना स्वयं के विकास का सुनिश्चित मार्ग है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दृष्टिकोण की विकृति मानव जीवन की सबसे बड़ी क्षति एवं असफलता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

स्वप्नों के पंख लगाकर सुनहरे आकाश में दौड़ तो कितनी ही लम्बी लगाई जा सकती है, पर पहुँचा कहीं नहीं जा सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सहिष्णुता कायरता नहीं, शक्ति है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

हराम का पैसा कभी किसी के लिए मंगलमय सिद्ध नहीं हो सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

विश्व में किसी एक व्यक्ति की इच्छा कभी भी नहीं चल सकती और न ही एक ही विचार की सर्वव्यापी स्वीकृति संभव है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो अपनी ही नजर में गिर गया वह सैकड़ों के उठाये नहीं उठ सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईर्ष्या आदमी को उसी तरह खा जाती है, जैसे कपड़े को कीड़ा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

परमेश्वर का प्यार केवल सदाचारी और कर्तव्य परायणों के लिए सुरक्षित है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

शान्ति से क्रोध को, भलाई से बुराई को, शौर्य से दुष्टता को और सत्य से असत्य को जीतें।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

विचारों की शक्ति आग या बिजली की तरह है। उसके साथ मखौलबाजी करना खतरनाक है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

संकट या तो मनुष्य को तोड़ देते हैं या फिर उसे चट्टान जैसा मजबूत बना देते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो झूठ बोलेगा, उसे झूठ सुनने के लिए तैयार रहना पड़ेगा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

लापरवाही एक प्रकार की आत्महत्या है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सेवा के क्षेत्र में पतन निवारण की सेवा सबसे बड़ी मानी गई है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

घटिया चरित्र, घटिया आदर्श किसी भी देश की दरिद्रता एवं अप्रतिष्ठा का कारण ही हो सकते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

विवेकहीन उत्साह तूफान से घिरे जहाज की तरह है, जिसके डूबने की आशंका हर क्षण बनी रहेगी।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

हर खोयी हुई चीज मिल सकती है, पर 'समय' गँवा देने के बाद उसका लौटना किसी भी प्रकार संभव नहीं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

पापी व्यक्ति की तरह निर्बलों को भी पृथ्वी पर सुख से जीने का अधिकार प्रकृति नहीं देती।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दूसरों की निन्दा करके किसी को कुछ नहीं मिला, जिसने अपने को सुधारा उसने बहुत कुछ पाया।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

समय के दुरुपयोग की भूल अपने भाग्य और भविष्य को दुकराने की तरह है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जीवन के बहुमूल्य क्षणों को व्यर्थ ही गँवाते चले जाना अपने भविष्य के साथ खिलवाड़ है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो समय गँवाता है, वह एक तरह से अपने उत्कर्ष और आनन्द का द्वार ही बन्द करता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

समय की सम्पदा को प्रमाद के श्मशान में जलाने वालों को आत्म-प्रताड़ना की आग में बेतरह जलना पड़ता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिसकी नैतिकता के प्रति आस्था तो हो, पर उसके लिए लड़ पड़ने की हिम्मत न हो वह भले ही कई डिग्रियाँ ले चुका हो, पर सुशिक्षित नहीं कहा जा सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

व्यक्ति की गरिमा प्रतिभा, पद या वैभव पर नहीं, व्यक्ति की आंतरिक महानता पर निर्भर है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

किसी को कुछ देने की इच्छा हो तो आत्म-विश्वास जगाने वाला प्रोत्साहन सर्वोत्तम उपहार के रूप में दें।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईमानदारी इन्सान को ईश्वर के समीप पहुँचा देती है और बेईमानी नरक का द्वार खोलती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अंतःकरण की आकाँक्षा का चयन ही मनुष्य का प्रथम पुरुषार्थ है। इसका चुनाव और निर्धारण उसे स्वयं ही करना पड़ता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईश्वर उनकी सहायता करता है, जो अपनी सहायता आप करते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बच्चों का सही निर्माण ही हमारे समाज और हमारे राष्ट्र का सच्चा निर्माण है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

स्वयं भय खाना या दूसरों को भय दिखाना, दोनों ही मनुष्य धर्म के विपरीत है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दैवी उन्नति के पथ पर आरुढ़ व्यक्ति के लिए क्रोध साक्षात् विष तुल्य है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

क्रोध भयंकर विष होता है, जो जीवनी शक्ति का हास करता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दृष्टिकोण की विकृति मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी क्षति एवं असफलता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अभिमान एक नशा है, जो मनुष्य को अंधा बना देता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो अवरोध से टकराते हुए बिना निराश हुए अपने निर्धारित पथ पर चलता चला जाता है, वह निश्चित ही लक्ष्य को पा लेता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अमीरी का रहन-सहन मनुष्य की मनुष्यता को उठाता नहीं, वरन् गिराता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अन्याय, अत्याचार के समक्ष मूक या निष्क्रिय रह जाना विनम्रता नहीं, कायरता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अन्याय, अनीति को सहना सहिष्णुता नहीं, कायरता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो सत्य के प्रति वफादार नहीं, वे कायर और कमजोर हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

पद लोलुपता से बढ़कर लोकमंगल के कार्यों में और कोई विघ्न नहीं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

असत्य से धन कमाया जा सकता है, पर जीवन का आनंद, पवित्रता और लक्ष्य नहीं प्राप्त किया जा सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ज्ञान अक्षय है। उसकी प्राप्ति मृत्यु शय्या तक बन पड़े तो भी उस अवसर को हाथ से न जाने देना चाहिए।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अवाँछनीय कमाई से बनाई हुई खुशहाली की अपेक्षा ईमानदारी के आधार पर गरीबों जैसा जीवन बनाये रहना कहीं अच्छा है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आवेश जीवन विकास के मार्ग का भयानक रोड़ा है, जिसको मनुष्य स्वयं ही अपने हाथ अटकाया करता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ज्ञान ही धन और ज्ञान ही जीवन है। उसके लिए किया गया कोई भी बलिदान व्यर्थ नहीं जाता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्यता सबसे अधिक मूल्यवान है। उसकी रक्षा करना प्रत्येक जागरूक व्यक्ति का परम कर्तव्य है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

उत्तेजना एक भयानक मानसिक रोग है। इससे बचे रहने में ही मनुष्य का हित है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दूसरों के साथ वह व्यवहार न करो, जो तुम्हें अपने लिए पसन्द नहीं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

पाप अपने साथ रोग, शोक, पतन और संकट भी लेकर आता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

उन्हें मत सराहो, जिनने अनीतिपूर्वक सफलता पाई और संपत्ति कमाई।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

असफलता केवल यह सिद्ध करती है कि सफलता का प्रयास पूरे मन से नहीं हुआ।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

गृहस्थ एक तपोवन है, जिसमें संयम, सेवा और सहिष्णुता की साधना करनी पड़ती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

धन से ज्ञान बढ़ा है, क्योंकि धन हम रखाते हैं और ज्ञान हमारी रखवाली करता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य परिस्थितियों का दास नहीं, वह उनका निर्माता, नियंत्रणकर्ता और स्वामी है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सबसे बड़ा दीन दुर्बल वह है, जिसका अपने ऊपर नियंत्रण नहीं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

शालीनता बिना मोल मिलती है, पर उससे सब कुछ खरीदा जा सकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कायर मृत्यु से पूर्व अनेकों बार मर चुकता है, जबकि बहादुर को मरने के दिन ही मरना पड़ता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिन्हें लम्बी जिन्दगी जीनी हो, वे बिना कड़ी भूख लगे कुछ भी खाने की आदत न डालें।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो जैसा सोचता है और करता है, वह वैसा ही बन जाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आय से अधिक खर्च करने वाले तिरस्कार सहते और कष्ट भोगते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कु कर्मों से बढ़ कर अभागा कोई नहीं, क्योंकि विपत्ति में उसका कोई साथी नहीं रहता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिसने जीवन में स्नेह, सौजन्य का समुचित समावेश कर लिया, सचमुच वही सबसे बड़ा कलाकार है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो बच्चों को सिखाते हैं, उन पर बड़े खुद अमल करें तो यह संसार स्वर्ग बन जाय।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जीवन का अर्थ है समय। जो जीवन से प्यार करते हों वे आलस्य में समय न गँवाएँ।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपने को मनुष्य बनाने का प्रयत्न करो, यदि उसमें सफल हो गये तो हर काम में सफलता मिलेगी।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

एकांगी अथवा पक्षपाती मस्तिष्क कभी भी अच्छा मित्र नहीं रहता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बुराई मनुष्य के बुरे कर्मों की नहीं, वरन् बुरे विचारों की देन होती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सब कुछ होने पर भी यदि मनुष्य के पास स्वास्थ्य नहीं, तो समझो उसके पास कुछ है ही नहीं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

छल, कपट और दम्भ के बल पर कोई बड़ा क्यों न बन जाय, किन्तु उसका वह बड़प्पन एक विडम्बना के अलावा और कुछ भी न होगा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईर्ष्यालु व्यक्ति सही विचार नहीं कर सकता, उसे तो किसी न किसी बहाने अंदर ही अंदर जलने का अभिशाप पूरा करना पड़ता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

परावलम्बी जीवित तो रहते हैं, पर मृत्यु तुल्य ही।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मांसाहारी मानवता को त्याग कर ही किया जा सकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो प्रेरणा पाप बनकर अपने लिए भयानक हो उठे, उसका परित्याग कर देना ही उचित है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कोई भी साधना कितनी ही ऊँची क्यों न हो, सत्य के बिना सफल नहीं हो सकती।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

परमार्थ मानव जीवन का सच्चा स्वार्थ है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

समय उस मनुष्य का विनाश कर देता है, जो उसे नष्ट करता रहता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अंध श्रद्धा का अर्थ है, बिना सोचे-समझे आँख मूँदकर किसी पर भी विश्वास।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सत्य ही वह सार्वकालिक और सार्वदेशिक तथ्य है, जो सूर्य के समान हर स्थान पर समान रूप से चमकता रहता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सत्य एक ऐसी आध्यात्मिक शक्ति है, जो देश, काल, पात्र अथवा परिस्थितियों से प्रभावित नहीं होती।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपनी विकृत आकाँक्षाओं से बढ़कर अकल्याणकारी साथी दुनिया में और कोई दूसरा नहीं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

परोपकार से बढ़कर और निरापद दूसरा कोई धर्म नहीं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अश्लील, अभद्र अथवा भोगप्रधान मनोरंजन पतनकारी होते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

उतावला आदमी सफलता के अवसरों को बहुधा हाथ से गँवा ही देता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईर्ष्यालु व्यक्ति की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह किसी की सुख-शान्ति नहीं देख सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मानसिक अशान्ति एक ऐसा आंतरिक आंदोलन है, जिसके उठने से मनुष्य का विवेक, विचार एवं ज्ञान नष्ट हो जाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो उत्साही है, उसके मन में पराजय की भावना नहीं आ सकती। पराजय तो उत्साहहीनता का लक्षण है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपनी क्षमताओं, गुणों और कर्तृत्वों को राष्ट्र के लिए समर्पित कर देना ही सबसे बड़ी आध्यात्मिक साधना है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

यदि किसी के पास ज्ञान है और वह उसका उपयोग नहीं करता, तो वह अनुपयोगिता उस ज्ञान की हत्या होगी।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

रो-खीजकर जीवन बिताना मनुष्यता का अनादर तथा जीवन का अमांगलिक विनाश है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

भगवान् की दण्ड संहिता में असामाजिक प्रवृत्ति भी अपराध है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

करना तो बड़ा काम, नहीं तो बैठे रहना यह दुराग्रह मूर्खतापूर्ण है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

केवल विचार जानकर ही किसी व्यक्ति को प्रामाणिक अथवा महान् नहीं माना जा सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

डरपोक और शक्तिहीन मनुष्य भाग्य के पीछे चलता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मानवता की सेवा से बढ़कर और कोई बड़ा काम नहीं हो सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मूर्ख व्यक्ति सुख और आराम की कल्पना करके आलस्य को अपनाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

नियतिगत या स्वाभाविक मृत्यु की अपेक्षा किसी सिद्धान्त के लिए-आदर्श के लिए मरना अधिक स्तुत्य है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

निर्बलता कोई स्थिति नहीं है, बल्कि वह आलस्य और अकर्मण्यता की ही परिणति है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

किसी का अमंगल चाहने पर स्वयं पहले अपना अमंगल होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अनियंत्रित कामनाओं की तरह मनुष्य के लिए निष्क्रिय कामनाएँ भी एक अभिशाप है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य के दोषों में जो दोष परमात्मा को सबसे अधिक अप्रिय है, वह है - अहंकार।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कु कर्मी से बढ़ कर अभागा और कोई नहीं है, क्योंकि विपत्ति में उसका कोई साथी नहीं होता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

पाप और बुराइयों के सामने सिर झुका देने-प्रतिरोध न करने से तो वे दिन दूने और रात चौगुने बढ़ती हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

धर्म और न्याय की रक्षा के लिए संघर्ष करना धर्म का प्रधान चिह्न है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आत्मा की पुकार सबसे बड़ी है, उसे किसी भी प्रकार दबाया नहीं जा सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो संघर्ष से डरता है, उससे बचने की कोशिश करता है, वह कायर और अधर्मी है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अन्याय को सहन करना, पाप से सहयोग करने एवं उसे बढ़ावा देने के समान है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अनाचार का प्रतिरोध करना मनुष्य का अत्यन्त पवित्र धर्म कर्तव्य है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करना प्रत्येक धर्मशील व्यक्ति का कर्तव्य है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

निराशा के समान मनुष्य के लिए और कोई पाप नहीं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आशा सर्वोत्तम प्रकाश और निराशा घोर अंधकार है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सदाचार की शक्ति अनाचार से हजार गुना बढ़कर है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सद्गुण किसी व्यक्ति विशेष को नहीं, मनुष्य के गुणग्राही दृष्टिकोण को कहते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दोष के डर से किसी काम को नहीं करना, कायर पुरुष का चिह्न है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

शारीरिक आलस्य और मानसिक प्रमाद पिछड़ेपन की निशानी है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

शरीर को भोग का साधन मानना एक अकल्याणकारी दृष्टिकोण है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

व्यक्ति की योग्यता, प्रतिभा और ज्ञान ही उसका कुल और गोत्र होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बकवासों से नहीं कार्यो से ही किसी की महानता परखी जाती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जहाँ के नागरिक अनीति के विरुद्ध आवाज न उठा सकें, उन्हें मृतप्राय ही कहना चाहिए।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

भक्त की इच्छाएँ भगवान् पूरी नहीं करते वरन् भगवान् की इच्छा पूरी करने के लिए भक्त को आत्म-समर्पण करना पड़ता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपराधी को समुचित दण्ड न मिले, तो ईश्वरीय न्याय और अनुशासन पर कुठाराघात होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

समाज में शीर्ष नेतृत्व प्रदान करने वालों की भूल अक्षम्य है, अन्यथा सामान्य प्रजा उन भूलों की पुनरावृत्ति करने से नहीं डरेगी।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईश्वर पर विश्वास करने का अर्थ है-अपने पर, अपने पुरुषार्थ पर, अपने उज्ज्वल भविष्य पर विश्वास करना।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आकाँक्षा की पूर्ति के लिए अपने सारे मनोयोग और पुरुषार्थ को नियोजित करने का नाम है-संकल्प।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

हमें धर्म की रक्षा के लिए कटिबद्ध होना चाहिए, ताकि धर्म हमारी रक्षा करने में समर्थ हो सके।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

श्रेष्ठता का मार्ग वह है, जिस पर खुद चलकर ही किसी को चलने की प्रेरणा दी जा सकती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

यदि मनुष्य अपनी आत्मा के सामने सच्चा है तो उसे सारी दुनिया की परवाह नहीं करना चाहिए।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

लक्ष्य के अतिरिक्त कुछ दिखाई न दे, उसी की साधना सफल होती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दूसरों के सम्मान और स्वाभिमान की रक्षा करने वालों का सम्मान ईश्वर बनाये रखता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो व्यक्ति अपने जीवन को शुभ कर्म द्वारा सार्थक नहीं बनाता, उसका जन्म लेना व्यर्थ है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

न्याय की रक्षा और धर्म के समर्थन के लिए अपने प्राणों की भी परवाह न करने वालों को नरसिंह कहते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आत्मा की हत्या करके अगर स्वर्ग भी मिले तो वह नरक है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ऐसा कोई भी काम न करें, जिससे अपनी अंतरात्मा अपने आप को धिक्कारे।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

स्वार्थपरता की कलंक कालिका से जिन्होंने अपना चेहरा पोत लिया है, वे असुर हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

इस संसार का सबसे बड़ा आनंद जिसे उल्लास कहते हैं, उच्च भावनाओं पर ही अवलम्बित है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्रलोभन एक तेज आँधी के समान है, जो मजबूत चरित्र को भी यदि वह सतर्क न रहे तो गिराने की क्षमता रखता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

भाग्य को मनुष्य स्वयं बनाता है, ईश्वर नहीं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बुद्धिमान वह है जो समय का रंग देखकर काम करे।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपने आपको हीन समझना निकृष्टतम हिंसा है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

व्यक्ति उतना ही जवान है, जितनी उसमें आत्म दृढ़ता है तथा वह उतना ही बूढ़ा है जितना वह भयभीत है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

एक मृत व्यक्ति और निराशावादी में कोई विशेष अंतर नहीं। एक की स्थिति शव की तरह है तो दूसरा चलती-फिरती लाश की तरह।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मानवी प्रगति के मार्ग में अत्यन्त छोटी किन्तु अत्यन्त भयानक बाधा है- अनियमितता की आदत।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सफलता का सबसे पहला रहस्य है, हर परिस्थिति के लिए तैयार रहना।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य की सच्चाई का एकमात्र निर्णयात्मक प्रभाव यह है कि वह अपने सिद्धान्त के लिए सब कुछ स्वाहा कर देने को तैयार रहे।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

वही उन्नति कर
सकता है, जो स्वयं को
उपदेश देता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो वर्तमान की उपेक्षा
करता है, वह अपना सब कुछ
खो देता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बेईमानी और चालाकी
से अर्जित किया वैभव या रौब
और बालू की दीवार की तरह
होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दुर्भावनाओं में मन
को फँसाकर कोई आदमी
दुनिया में चैन की जिंदगी
नहीं जी सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

स्वार्थ, अहंकार और
लापरवाही की मात्रा बढ़
जाना, यही किसी व्यक्ति के
पतन का कारण होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

समर्थ व्यक्तियों का
बड़प्पन उनकी उदारता, क्षमा
और सहिष्णुता में झलकता
है, न कि प्रदर्शन या ढिंढोरा
पीटने में।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दीनता का प्रदर्शन
दूसरों की सहायता ही नहीं,
सहानुभूति मिलने की
संभावना को भी हाथ से
झटक लेता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

किसी का मनोबल
बढ़ाने से बढ़कर और अनुदान
इस संसार में नहीं है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सुख की प्राप्ति दरअसल एक
साधना है, जो अनवरत श्रम,
अटूट लगन, धैर्य और विश्वास
से ही मिल सकती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिसने शिष्टता और
नम्रता नहीं सीखी, उनका
बहुत सीखना भी व्यर्थ रहा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

संसार का सबसे बड़ा
दीवालिया वह है, जिसने
उत्साह खो दिया।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बड़प्पन सुविधा संवर्धन
का नहीं, सद्गुण संवर्धन का
नाम है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

समय का सदुपयोग
हम अपना लें तो मन को
वश में रखने का लाभ
मिलता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

यदि तुम चाहते हो कि
लोग तुम्हारी प्रशंसा करें, तो
आत्म-प्रशंसा कभी न करो।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आत्मा का संदेश और
ईश्वर का प्रकाश परिष्कृत
निर्मल मन पर ही उतरता
है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

विश्वास खो बैठना
मनुष्य का अशोभनीय
पतन है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

भय हमारी स्थिरता
और प्रगति में सबसे बड़ा
बाधक है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

संकल्प का संबंध सत्य
और धर्म से होता है। अधर्म
और अत्याचार के लिए उसका
प्रयोग नहीं हो सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

वे कायर हैं, जिसने
दूसरों की भलमनसाहत का
अनुचित लाभ उठाया।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

धनवान नहीं,
चरित्रवान् ही सुख पाते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अदालत और पुलिस
से बच सकते हैं, परमेश्वर
से नहीं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

संपत्ति से नहीं,
सद्बुद्धि और सत्प्रवृत्तियों से
उन्नति होती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

निराशा एक
मानसिक रोग है। यह
मनुष्य की गतिशीलता को
अस्वस्थ बना देती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कर्मफल एक ऐसा
अमिट तथ्य है, जो आज नहीं
तो कल भुगतना ही पड़ेगा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

चिन्ता एक प्रकार की
ठंडी आग है, जो मनुष्य को
भीतर ही भीतर जलाती
रहती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्रशंसा सफलता की
नहीं, वरन् सज्जनता की ही
की जानी चाहिए।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

भाग्य दूसरों के सहारे
विकसित नहीं होता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

किसी कुपात्र को किसी
कुचक्र के आधार पर कुछ मिल
भी जाये तो उसके देर तक
टिकने की गुंजाइश नहीं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

पापी को तो प्यार
किया जा सकता है, पर पाप
के प्रति तो निष्ठुरता बरतनी
ही पड़ेगी।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अवसर की प्रतीक्षा में
मत बैठो। आज का अवसर
ही सर्वोत्तम है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दूसरों की सबसे बड़ी सहायता यही की जा सकती है कि उनके सोचने में जो त्रुटि है उसे सुधार दिया जाय।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ठगना बुरी बात है, पर ठगाना उससे कम बुरा नहीं है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्रतिभा किसी पर आसमान से नहीं बरसती। वह अंदर से जागती है और उसे जगाने के लिए केवल मनुष्य होना पर्याप्त है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

संकल्प जीवन की उत्कृष्टता का मंत्र है। उसका प्रयोग मनुष्य जीवन के गुण विकास के लिए होना चाहिए।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

‘पुण्य की जय-पाप की भी जय’ ऐसा समदर्शन तो व्यक्ति को दार्शनिक भूल-भुलैया में उलझाकर संसार का सर्वनाश ही कर देगा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपने दोषों की ओर से अनभिज्ञ रहने से बड़ा प्रमाद इस संसार में और कोई दूसरा नहीं हो सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अव्यवस्थित जीवन, जीवन का ऐसा दुरुपयोग है जो दरिद्रता की वृद्धि कर देता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

काम को कल के लिए टालते रहना आज का दिन आलस्य में बिताना एक बहुत बड़ी भूल है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आरामतलबी और निष्क्रियता से बढ़ कर अनैतिक बात और दूसरी कोई नहीं हो सकती।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

किसी समाज, देश या व्यक्ति का गौरव अन्याय के विरुद्ध लड़ने में ही परखा जा सकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दुष्कर्म स्वतः ही एक अभिशाप है, जो कर्त्ता को भस्म किये बिना नहीं रहता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कर्त्तव्य पालन करते हुए मौत मिलना मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी सफलता और सार्थकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपनी संस्कृति को पददलित-अपमानित होता देखकर जिसका खून न खौलता हो वह नरपशु है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

किसी भी समाज या राष्ट्र की सबसे बड़ी कमजोरी उसके नागरिकों की आत्मिक दुर्बलता हुआ करती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बड़प्पन, बड़े आदमियों के संपर्क से नहीं, अपने गुण, कर्म और स्वभाव की निर्मलता से मिला करता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य की संकल्प
शक्ति संसार का सबसे बड़ा
चमत्कार है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दयालुता का अर्थ
अनाचार का संरक्षण नहीं और
क्षमा का अर्थ अनीति को
स्वच्छंद रूप से कुहराम मचाते
रहने की छूट देना नहीं है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

स्वाधीन मन
मनुष्य का सच्चा
सहायक होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अंध-परम्पराएँ मनुष्य
को अविवेकी बनाती हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपने दोषों से
सावधान रहो, क्योंकि यही
ऐसे दुश्मन हैं जो छिपकर
वार करते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आत्मविश्वासी कभी
हारता नहीं, कभी थकता
नहीं, कभी गिरता नहीं और
कभी मरता नहीं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ऊँचे सिद्धान्तों को
अपने जीवन में धारण करने
की हिम्मत का नाम है-
अध्यात्म।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिसके अंदर ऐय्याशी,
फिजूलखर्ची और विलासिता
की कुर्बानी देने की हिम्मत
नहीं वे अध्यात्म से कोसों
दूर हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

उनकी प्रशंसा करो
जो धर्म पर दृढ़ हैं। उनके
गुणगान न करो जिनने
अनीति से सफलता प्राप्त
की।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

हम आमोद-प्रमोद
मनाते चलें और आसपास का
समाज आँसुओं से भीगता रहे
ऐसी हमारी हँसी-खुशी को
धिक्कार है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्रतिभावान् व्यक्तित्व
अर्जित कर लेना घनाध्यक्ष
बनने की तुलना में कहीं
अधिक श्रेष्ठ और श्रेयस्कर है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दरिद्रता कोई दैवी प्रकोप नहीं,
उसे आलस्य, प्रमाद, अपव्यय
एवं दुर्गुणों के एकत्रीकरण का
प्रतिफल ही कहना चाहिए।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मात्र हवन, धूपबती और
जप की संख्या के नाम पर प्रसन्न
होकर मनोकामना पूरी कर दिया
करें, ऐसा भगवान् दुनिया में
कहीं नहीं है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जब हम किसी पशु-
पक्षी की आत्मा को दुःख
पहुँचाते हैं, तो स्वयं अपनी
आत्मा को दुःख पहुँचाते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

शत्रु की घात विफल
हो सकती है, किन्तु आस्तीन
के साप बने मित्र की घात
विफल नहीं होती।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपने बच्चे की सच्ची स्नेहिल वही माता हो सकती है, जिसे दूसरे बच्चों से भी प्रेम हो।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

निठल्ले व्यक्तियों की मित्रता से अपनी, अपने पैसे तथा अपने समय की रक्षा करना हर सावधान आदमी का कर्तव्य है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

परिष्कृत दृष्टिकोण से जिंदगी जीने की प्रकाश-प्रेरणा देने का नाम है - अध्यात्म।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

यदि मनुष्य कुछ सीखना चाहे, तो उसकी प्रत्येक भूल कुछ न कुछ सिखा देती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

विलासी व्यक्ति अपने शरीर को खोखला बनाकर कुत्ते की मौत मरते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

परमार्थ की अभिव्यक्ति वाणी नहीं, व्यवहार से ही सिद्ध होती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

स्वार्थपूर्ण प्रेम न संसार में सफल होता है और न आत्मिक क्षेत्र में।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आदर्शों को जीवन मूल्य कहा गया है अर्थात् जीवन का मूल्य देकर भी जिन पर दृढ़ रहा जाना चाहिए।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अकर्मण्यता मृत्यु का दूसरा नाम है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

निःस्वार्थ भावना से जीवन बिताने के लिए संसार में निरुत्साह, पश्चाताप और दुःख की कोई बात नहीं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दूसरों की बुराई, दोष दर्शन, छिद्रान्वेषण अपने ही विकृत आंतरिक जीवन का दर्शन है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बुरे विचार के प्रवेश को रोकने का अच्छा उपाय यह है कि मनुष्य अपने आपको किसी न किसी भले काम में लगाये रहे।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

स्वार्थपरता एक अनैतिक मूर्खता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

असंतोष एक प्रकार की मानसिक व्याधि है। यह मनुष्य की सुख-शान्ति का हरण कर लेता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अमीरी का सम्मान एक ऐसा दूषित सामाजिक दृष्टिकोण है जिसके कारण लोग अनुचित रीति से भी धन कमाने में संकोच नहीं करते।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दृढ़ आत्मविश्वास
ही सफलता की
एकमात्र कुञ्जी है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

समस्त हिंसा, द्वेष,
बैर और विरोध की भीषण
लपटें दया का संस्पर्श पाकर
शान्त हो जाती हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आत्मीयता को जीवित
रखने का सबसे अच्छा तरीका
यह है कि गलतियों को हम
उदारतापूर्वक क्षमा करना
सीखें।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

काम न करना प्रकृति
के विरुद्ध विद्रोह और जीवन
का अपमान है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अनीति सहने का अर्थ
है उसे और अधिक बढ़ाने एवं
परिपुष्ट करने में सहयोग देना।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

व्यक्ति के चरित्रवान्
बनने से ही किसी समाज का
सच्चा सुधार हो सकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य जितना
निर्भय होगा, उतना ही वह
महान् कार्यों का सूत्रपात
करेगा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बिना श्रम के
अपनी आवश्यकता
पूर्ण करना चोरी है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो काम हमारे सामने
हैं, उसे पूरा करने में जुट
जाना ही हमारा वर्तमान धर्म
है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

समाज का सौन्दर्य,
सुख और शान्ति चरित्रवान्
व्यक्तियों के द्वारा ही स्थिर
रहती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बड़प्पन का यही
नियम है कि जो व्यक्ति बड़ा
बनने की कोशिश करेगा वह
सबसे छोटा बनता दिखाई
देगा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

छोटा से छोटा काम भी
जीवन विकास के लिए उसी तरह
महत्त्वपूर्ण है, जिस तरह एक छोटा
बीज कालान्तर में विशाल वृक्ष बन
जाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दुनिया में भलमनसाहत
का व्यवहार करने वाला एक
चमकता हुआ हीरा है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

इस संसार में
कमजोर रहना सबसे
बड़ा अपराध है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आत्म-प्रताड़ना
सबसे बड़ी मानसिक
व्याधि है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

हम ऊँचे उठ रहे हैं
या नीचे गिर रहे हैं इसकी
एक ही कसौटी है कि अपनी
आँखों में हमारा मूल्य घट
रहा है या बढ़ रहा है?

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य होकर भी
जो किसी का उपकार नहीं
करता, उसके जीवन को
धिक्कार है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो आस्तिक है उसकी
आशा कभी क्षीण नहीं हो
सकती। वह केवल उज्ज्वल
भविष्य पर ही विश्वास रखता
है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

देशभक्ति और बलिदान
की भावनाओं से ओतप्रोत
नागरिक टैकों और मिसाइलों
से भी अधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य अपने
भाग्य का निर्माता
आप है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ज्ञान की आराधना
इस विश्व का सर्वश्रेष्ठ
सत्कर्म है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

धैर्य के समान
मूल्यवान् और कोई संपत्ति
मनुष्य के पास नहीं है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य होकर भी जो
किसी का कोई उपकार
नहीं करता, उसके जीवन
को धिक्कार है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

व्यसन और
व्यभिचार दीर्घजीवन
के शत्रु हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

पैसे की कमाई ही दौलत
नहीं कहलाती, सच्ची दौलत
तो आंतरिक सद्प्रवृत्तियों
का बढ़ाना ही है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो मनुष्य अपने
मानसिक विकार, चिंता,
भय, क्रोध और संदेह से
ग्रस्त है वह स्वाधीन नहीं
कहला सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अनीति और अनाचार के
विरुद्ध यदि अकेले ही लड़ने को
खड़ा होना पड़े तो भी पैर पीछे
न हटाना सबसे बड़ा पराक्रम
है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपना सुधार
संसार की सबसे
बड़ी सेवा है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईश्वर को प्रसन्न करने
के लिए उसकी स्तुति-पूजा
ही काफी नहीं, उसकी आज्ञा
का पालन भी आवश्यक है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सच्ची विद्या अक्षर ज्ञान
में नहीं, सद्गुणों से परिपक्व
श्रेष्ठ व्यक्तित्व में ही सन्निहित
है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

क्रोध इतना फुर्तीला मनोविकार है कि इसमें सोचने-विचारने-समझाने बुझाने का अवसर नहीं रहता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

शारीरिक श्रम करने को बेइज्जती समझना एक बहुत ही बड़ा मानसिक दोष है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सहानुभूति एक शक्ति है-एक सम्बल है, जिससे मानवता के हितों की रक्षा होती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

युग परिवर्तन का पहला कार्य है अपना परिवर्तन। हम बदलेंगे तो हमारी दुनिया भी बदलेगी।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सच्चरित्रता संसार की सर्वोपरि संपत्ति है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अनुशासनबद्ध जीवन जीने वाला व्यक्ति सदैव प्रसन्नचित्त रहता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बात-बात में हँसी मजाक करना, काम के समय विनोद करना अपनी कीमत और प्रभाव को कम करना है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपने कर्तव्य पथ पर कठोर श्रम के साथ बिना किसी तरह की शिकायत किए ही चलते रहना सफलता का मूलमंत्र है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

चरित्रवान् का वैभव कभी क्षीण नहीं होता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो बुरे कामों में लगा रहता है वह उतना बुरा नहीं, पर बुरा वह है जो अच्छाई के नाम पर आलसी बना बैठा रहता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

विषयों में आसक्त रहना प्रारंभ में तो सुखकर लगता है, किन्तु परिणाम में हलाहल विष की तरह प्रभाव डालता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अज्ञान जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अभिमानग्रस्त व्यक्ति सदैव अपनेपन को विजयी रखने का प्रयत्न करता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

हराम की कमाई नहीं, वरन् ईमानदारी का पैसा ही मनुष्य को सुख-शान्ति प्रदान कर सकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बीता हुए समय और कहे हुए शब्द कभी वापिस नहीं बुलाए जा सकते।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बच्चा एक अंकुरित और विकासमान पौधा है, जिसके प्रति थोड़ी भी चूक हो जाने से बच्चे का भविष्य बिगड़ सकता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अमीरी का रहन-सहन मनुष्य को उठाता नहीं, गिराता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिसमें मानवी आदर्शों की रक्षा में कुछ त्याग और बलिदान करने का शौर्य-साहस उठता है, वही ब्राह्मण है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईमानदारी की सूखी रोटियाँ, बेईमानी के पकवानों से अधिक स्वादिष्ट होती हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपनी ही बात को सब कुछ मान उसे सर्व सम्मत मान लेना वाणी का दुरुपयोग है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिस व्यक्ति में टाल-मटोल का रोग लग जाता है, उसके सब काम अधूरे ही पड़े रह जाते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

किसी भी रूप में अशिष्टता मानव जीवन का बहुत बड़ा कलंक है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

हम कितना सुख या आनंद प्राप्त कर सकते हैं, यह हमारे अपने ही दृष्टिकोण पर निर्भर करता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

किसी कामना से यदि हम किसी के प्रति श्रद्धा प्रकट करते हैं, तो वह श्रद्धा नहीं चापलूसी है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

हवा के एक झोके में बुझ जाने वाला दीपक नहीं, निरन्तर संकल्पशील सूर्य ही संसार को प्रकाश दे पाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अभय होने के सदृश सुख इस संसार में है नहीं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दूसरों का तिरस्कार करने वाला कई गुना तिरस्कार पाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

संसार को अणुबम से उतना खतरा नहीं, जितना वासना के बवण्डर से है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

भड़कीला शृंगार व्यभिचार का पूर्ण रूप है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दृष्टि दोष-विकार ग्रस्त चिंतन किसी भी संक्रामक रोग से कम नहीं है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अंधविश्वास सृजेता
को भी खाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दुःख ईश्वर का वह
वरदान है, जिससे हम सचेष्ट
होते हैं और जीवन की शक्तियों
को उपयोग में लाते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मित्रता त्याग, बलिदान
और आत्मोत्सर्ग पर जीवित
रहती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्रतिशोध प्रतिद्वंद्वी को
ही नहीं, जन्मदाता को भी
खाकर ही छोड़ता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य का नाम
उसकी संतान से नहीं,
सत्कर्मों से अमर होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

आलसी और
प्रमादी धरती के भार हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

महान् चरित्र और आदर्शवान्
व्यक्तियों का समय खाली नहीं
रहता। उनकी महानता का चिह्न
ही व्यस्तता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

शासन की पवित्रता
उतनी ही आवश्यक है,
जितनी धर्म-पुरोहितों की
सदाचारिता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपराधी और अन्यायी
चाहे समाज से बच जाए, पर
आत्मा की कचोट उसे चैन से
नहीं रहने देगी।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपनी आत्मा की
आवाज अनसुनी कर अपने
आपको धोखा देना ही सबसे
बड़ा धोखा है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

गायत्री उपासना
राष्ट्रीय ही नहीं, सार्वभौम
उपासना है। उसकी उपेक्षा
ऋषियों की दृष्टि में एक धर्म-
अपराध माना गया है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

किसने कितनी उन्नति
की इसकी सच्ची कसौटी यह
है कि उस मनुष्य के दृष्टिकोण
और स्वभाव में कितना
परिष्कार हुआ।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

धन्य हैं वे लोग
जिनका जीवन परोपकार
के हवन कुण्ड में समिधा
बनकर जल जाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अज्ञानता एक ऐसी
रात्रि है, जिसमें चाँद है न
तारें।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

शीलवान होना किसी
भी वस्त्रालंकार से
बढ़कर है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

शिष्टाचार व्यवहार की वह रीति-नीति है, जिसमें व्यक्ति और समाज की आंतरिक सभ्यता और संस्कृति के दर्शन होते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मनुष्य अपने अधिकार की रक्षा का दावा तो कर सकता है, किन्तु वह किसी के अधिकार छीनने का हकदार नहीं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कुढ़न और असंतोष किसी भी व्यक्ति के कुपात्र होने का सबसे बड़ा प्रमाण है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दहेज का पिशाच कन्याओं का रक्तपात करने वाला आज के युग का सबसे बड़ा घृणित अभिशाप है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जिस धर्म को अपनाने से मनुष्य घाटे में रहे, वह सच्चा धर्म नहीं हो सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

चरित्र और नैतिक साहस को गिराने में ऋण बहुत सहायक है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कर्म की पूजा ही परमात्मा की सच्ची उपासना है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

भय विमुक्त होना मनुष्य का सबसे बड़ा सौभाग्य है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

असत्य सदा हारता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

घबराहट का प्रभाव पेट में घुरा घोपे जाने से भी अधिक बुरा होता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बीमार शरीर, मलिन मन और पतित समाज में रहना नरक के समान दुःखदायी ही रहता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कोई औषधि-कोई पद्धति ऐसी नहीं जो असंयम के रहते हुए आरोग्य को सुरक्षित रख सके।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ऋणी होकर मनुष्य कभी सुखी नहीं रह सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बुरे विचार और बुरे कार्य नींद के शत्रु हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अनुत्साह मनुष्य की अयोग्यता का चिह्न है। इससे मनुष्य की जो नैसर्गिक दिव्यता है उसका लोप हो जाता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

परमात्मा की सच्ची
पूजा है-सद्व्यवहार।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दुर्व्यवहार दुरुपयोग-
कर्ता के ही प्राण लेता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

पहले मनुष्य भोग
भोगता है, बाद में भोग
मनुष्य को भोगता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो कुमार्ग पर
चलने के लिए दबाव देता
है, वह दुष्ट है और जो दबता
है वह कायर।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जो संसार को
सद्व्यवहार न दे सका, उसकी
उपासना अधूरी है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मानवी आचरण की
शुद्धता और पवित्रता में
समाज, राष्ट्र और देश के
कायाकल्प करने की शक्ति
विद्यमान है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

ईश्वर की आज्ञा की जो
जान-बूझकर अवज्ञा करता है,
उसे ईश्वर की कठोरता का दण्ड
भुगतना पड़ता है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

निराशा महाव्याधि है, जो
व्यक्ति की संपूर्ण आध्यात्मिक-
मानसिक शक्तियों को नष्ट करके
रख देती है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

निःस्वार्थ और आदर्शों
पर अवलम्बित प्रेम में न तो
असफलता की गुंजायश है,
न शिकायत का प्रश्न।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दुःख और कठिनाईयाँ ही
जीवन का एक ऐसा अवसर है
जिसमें मनुष्य अपने आंतरिक
जीवन की ओर अभिमुख होता
है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बड़ों की आज्ञा का
पालन किया जाना चाहिए, पर
विवेक की पुकार उससे भी
पहले सुनी जानी चाहिए।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

कुढ़न एक ऐसी
बीमारी है, जिसका कोई
इलाज नहीं है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बेईमान मधुर
भाषी अधिक
खतरनाक होते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

लोकेषणा का लोभी
ईश्वर को प्यारा नहीं हो
सकता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

दहेज स्पष्टतः नारी
जाति का तिरस्कार है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

किसी भी कारण से
जीवन में असत्य को स्थान
देना अपनी बरबादी का द्वार
खोलना है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सज्जन लोग आमतौर
से इसीलिए परेशान किये
जाते हैं, क्योंकि वे गुण्डों की
तरह संगठित नहीं होते।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

वासना और प्रेम दो
दृष्टिकोण एक दूसरे से उतने
ही भिन्न हैं, जितना स्वर्ग-
नरक में भिन्नता।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

प्रोत्साहन और प्रशंसा
करने में जिसकी जीभ
रुकती है, वह सबसे निकृष्ट
कोटि का कंजूस है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जीवन में किन्हीं ऊँचे
आदर्शों की स्थापना करके उनके
अनुसार अपने को न चलाना
सबसे बड़ी आत्म-प्रवंचना है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

जमाना तब बदलेगा,
जब हम स्वयं बदलेंगे।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपने दोषों को कबूल
करने का साहस करें, ताकि
यह स्पष्ट हो जाय कि सच्चाई
के प्रति आपमें साहस है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अयोग्य की कामनाएँ
कभी पूर्ण नहीं होती।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

सादगी सबसे बड़ा फैशन है।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

श्रेष्ठता प्राप्त करने का अभ्यास
आवेश या अंधानुकरण पर
आधारित न हो, अन्यथा अधिक
देर तक उस सत्कर्म में टिके
रहना संभव न होगा।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

बड़ा आदमी बनने की
महत्वाकांक्षा वाले व्यक्ति इस
संसार में अत्यधिक हानि-
कारक सिद्ध होते हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपना धर्म, अपनी
संस्कृति अथवा अपनी सभ्यता
छोड़कर दूसरों की नकल करने
से कल्याण की संभावनाएँ
समाप्त हो जाती हैं।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

अपनी सीमा और शक्ति
से परे की आकांक्षाएँ बना लेना
बड़ी भारी भूल है। ऐसे लोगों
की आकांक्षाएँ कभी पूरी नहीं
होती।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

मानसिक दक्षता का
पूरा-पूरा उपयोग न करने की
प्रवृत्ति का नाम है-प्रमाद।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अमृत वचन

तुच्छ स्वार्थों की उपेक्षा
करने का दुरसाहस जो कर सके,
समझना चाहिए कि उसे
आत्मबल के भण्डार की चाबी
मिल गई।

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य